Interaction Program on Pali as a Classical Language and the Inauguration of Pali Courses!

In collaboration with Dr Syama Prasad Mookerjee Research Foundation , Swami Vivekananda Subharti University presents: **M.A. (Pali), 6-month Certificate Courses, and Vipassana Meditation.**

09 January 2025

पाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देना भारतीय परंपराओं के प्रति प्रधानमंत्री जी की संवेदनशीलता

मेरठ/चंडीगढ़ : 09 जनवरी 2025

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री तरूण चुग ने मेरठ के स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय में पाली भाषा और विपश्यना से संबंधित तीन नए पाठ्यक्रमों के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित किया। अपने वक्तव्य में चुग ने देशज भाषाओं, विशेष रूप से पाली भाषा, के महत्व पर बल दिया और भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर को संरक्षित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस ऐतिहासिक फैसले की सराहना की, जिसमें 3 अक्टूबर 2024 को पाली सहित पांच भाषाओं को "शास्त्रीय भाषा" का दर्जा दिया गया। चुग ने कहा कि यह निर्णय न केवल इस भाषा की गरिमा को पुनर्स्थापित करता है, बल्कि भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के साथ भारत के गहरे आध्यात्मिक संबंध को भी पुनर्जीवित करता है। उन्होंने कहा, “प्रधानमंत्री मोदी के विज़न के कारण आज लाफिंग बुद्धा फिर से मुस्कुरा रहा है।”

चुग ने भारत के गौरवशाली विरासत पर प्रकाश डाला और कहा कि यह भगवान बुद्ध की भूमि है और प्रधानमंत्री मोदी द्वारा विश्व में भगवान बुद्ध के संदेशों का प्रचार-प्रसार सराहनीय है। उन्होंने सुभारती विश्वविद्यालय प्रशासन और कुलपति जी के थपलियाल की सराहना करते हुए छात्रों से इस अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए अनुरोध किया, उन्होंने कहा कि पाली और विपश्यना के अध्ययन में अपार संभावनाएं हैं जो समाज में शांति और जागरूकता लाने में सहायक हो सकती हैं।

कार्यक्रम में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. अनिर्बान गांगुली ने सर्वप्रथम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की प्रशंसा की और कहा कि उनकी दूरदर्शिता और भारतीय परंपराओं के प्रति संवेदनशीलता ने इस तरह के निर्णय को संभव बनाया है।

उन्होंने कहा कि यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। यह ऐतिहासिक निर्णय भारत की सांस्कृतिक और सभ्यतागत धरोहर को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

डॉ. गांगुली ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने हमेशा भारतीय सभ्यता, संस्कृति और भाषाओं को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया है, और पाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देना इसी दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है।

उन्होंने यह भी कहा कि पाली भाषा, जो भारत और विश्व के बीच सभ्यतागत संबंधों की मजबूत कड़ी है, को संरक्षित करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में ऐसे निर्णय हमारे सांस्कृतिक और भाषाई गौरव को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

इस दौरान कार्यक्रम में मुख्य रूप से भिक्षु डॉ काचयान श्रमण, भिक्षु डॉ चंद्रा वाइस चांसलर डॉ जी.के थपलियाल, डॉ हीरो हितो एवं कई अन्य बुद्धिस्ट संतो सहित विश्वविद्यालय के सैकड़ों छात्र कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

SUBHARTI UNIVERSITY
Approved by UGC
NAAC
Interaction Program on
PALI AS A CLASSICAL LANGUAGE
and
INAUGURATION OF PALI COURSES
M.A. (Pali) 2025-2026
Six Months Certificate Course in Pali & Six Months Vipassana Meditation Course
Chief Guest
Hon'ble Shri Tarun Chugh
Special Remarks
Presided by

Dr. Heero Hito
Advisor
Samrat Ashok Subharti School of Buddhist Studies
Organiser
Hon'ble Shri Tarun Chugh
Hon'ble Dr. Anirban Ganguly
DR. G.K. THAPLIYAL
Dr. Mohit Wadhwa

SWAMI VIVEKANAND SUBHARTI UNIVERSITY
2008

SUBHARTI UNIVERSITY
PALI AS A CLASSICAL LANGUAGE
and
INAUGURATION OF PALI COURSES
M.A. (Pali) 2025-2026
Six Months Certificate Course in Pali & Six Months Vipassana Meditation Course

SUBHARTI UNIVERSITY
Interaction Program on
PALI AS A CLASSICAL LANGUAGE
and
INAUGURATION OF PALI COURSES
M.A. (Pali) 2025-2026
Six Months Certificate Course in Pali & Six Months Vipassana Meditation Course

PALI AS A CLASSICAL LANGUAGE
INAUGURATION OF PALI COURSES

जागरण
10 जनवरी, 2025 दैनिक जागरण

भगवान बुद्ध की विरासत को पुनर्जीवित कर रहे हैं पीएम : तरुण चुग

- भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री ने मेरठ में एक कार्यक्रम में की शिरकत
- बोले, पाली भाषा समेत पांच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया

जागरण संवाददाता, मेरठ : भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री तरुण चुग ने गुरुवार को सुभारती विश्वविद्यालय में पालि भाषा एवं विपश्यना से संबंधित तीन पाठ्यक्रमों के शुभारंभ में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के साथ गहरे आध्यात्मिक संबंध को भी पुनर्जीवित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री ने एतिहासिक निर्णय लेते हुए तीन अक्टूबर 2024 को उन्होंने पालि भाषा समेत पांच भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया। अब इन भाषाओं में पढ़ाई होगी।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री तरुण चुग ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में तीन नई भाषाओं में पाठ्यक्रम जुड़ने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री के विजन के कारण लाफिंग बुद्धा फिर से मुस्करा रहा है। कार्यक्रम में पहुंचे डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के चेयरमैन डा. अर्नवान गांगुली ने कहा कि पाली भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिलना बेहद सराहनीय है। उन्होंने कहा कि पाली भाषा भारत के विदेशों में भी संबंधों को मजबूत बनाएगी। कार्यक्रम में सैकड़ों छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

सुभारती विश्वविद्यालय में तीन पाठ्यक्रमों का शुभारंभ करते अतिथि ● सौ. विश्वविद्यालय

अमर उजाला
10 जनवरी, 2025

पालि-आधारित पाठ्यक्रम का हुआ शुभारंभ

मेरठ। सुभारती विवि के सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग में बृहस्पतिवार को प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित करने एवं बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन पालि-आधारित पाठ्यक्रम का शुभारंभ हुआ। छात्र एमए इन पालि स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम होगा जबकि छह माह के पालि भाषा में प्रमाण पत्र भी किया जा सकेगा। प्रमाण पत्र में पालि का मूलभूत ज्ञान प्रदान किया जाएगा। छह महीने का ही विपस्सना ध्यान प्रमाण पत्र होगा जो व्यक्तिगत विकास पर केंद्रित होगा।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत दुनियाभर में बुद्ध की कालातीत शिक्षाओं का प्रसार करने में सहायक रहा है। भारत ने विश्व को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं वाक्यांश का हवाला देते हुए शांति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक के रूप में भारत की ऐतिहासिक भूमिका को समझाया। कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं ने भारत की पहचान को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में आकार दिया है जो अहिंसा और सद्भाव की वकालत करता है। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ.अनिर्बान गांगुली ने कहा कि पालि भाषा को ऐतिहासिक बताया। बुद्ध त्रिरत्न मिशन के महासचिव पूजनीय भिक्षु डॉ.कचायन श्रमण ने कहा कि पालि भाषा और विपस्सना आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने में सहायक है। कुलपति मेजर जनरल डॉ.जीके थपलियाल ने कहा कि पालि भाषा की प्राचीनता और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता व्यापक है। डॉ. मुकेश मेहता ने संचालन किया।

सुभारती में आयोजित कार्यक्रम में अतिथि को सम्मानित करते शिक्षक। स्रोत: संस्थान

Hindustan Times
10 जनवरी, 2025

सुभारती विश्वविद्यालय में शुरू हुए पालि के तीन कोर्स

गुरुवार को सुभारती विवि में मुख्य अतिथि का स्वागत किया गया।

कार्यक्रम

- प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा एवं बौद्ध शिक्षा को बढ़ावा देने का उद्देश्य
- कहा, बौद्ध ने भारत को नई पहचान दी, मारत शांति-सद्भाव के साथ

मेरठ, प्रमुख संवाददाता। सुभारती विवि के सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग में गुरुवार को प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित करने एवं बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन पालि-आधारित पाठ्यक्रम का शुभारंभ हुआ। छात्र एमए इन पालि स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम होगा जबकि छह माह के पालि भाषा में प्रमाण पत्र भी किया जा सकेगा। प्रमाण पत्र में पालि का मूलभूत ज्ञान प्रदान किया जाएगा। छह महीने का ही विपस्सना ध्यान प्रमाण पत्र होगा जो व्यक्तिगत विकास पर केंद्रित होगा।

भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत दुनियाभर में बुद्ध की कालातीत शिक्षाओं का प्रसार करने में सहायक रहा है। उन्होंने भारत ने विश्व को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं वाक्यांश का हवाला देते हुए शांति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक के रूप में भारत की ऐतिहासिक भूमिका को समझाया। कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं ने भारत की पहचान को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में आकार दिया है जो अहिंसा और सद्भाव की वकालत करता है। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ.अनिर्बान गांगुली ने पालि भाषा को ऐतिहासिक बताया। बुद्ध त्रिरत्न मिशन के महासचिव पूजनीय भिक्षु डॉ.कचायन श्रमण ने कहा पालि भाषा और विपस्सना आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने में सहायक है।

विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ.जीके थपलियाल ने कहा कि पालि भाषा की प्राचीनता और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता व्यापक है। डॉ. मुकेश मेहता ने संचालन किया। सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग के सलाहकार डॉ.हीरो हितो सहित सभी शिक्षक एवं अधिकारी मौजूद रहे।

यूपी वेस्ट

मोदी के नेतृत्व में बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार विश्व में हो रहा है: चुग

स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय में पाली पाठ्यक्रमों का उद्घाटन

वैभव न्यूज ■ मेरठ

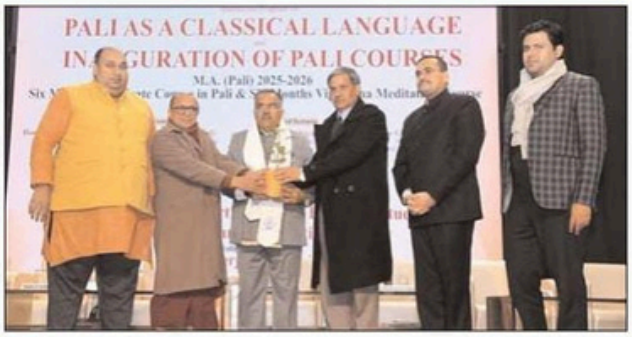

स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ के सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग तथागत बुद्ध शोधपीठ के द्वारा प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन पालि-आधारित पाठ्यक्रम उद्घाटन किया। उद्घाटन कार्यक्रम की शुरुआत प्रज्ञा और करुणा के प्रतीक भगवान बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुई। स्वागत वक्तव्य एवं संचालन डॉ. मुकेश मेहता, सहायक आचार्य, सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग तथागत बुद्ध शोधपीठ के द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। साथ ही उन्होंने संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन भी शालीनता एवं कुशलता पूर्वक किया। इस दौरान तीन नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए। एम.ए. इन पालि 2025-2026 एक व्यापक स्नातकोत्तर कार्यक्रम। पाली का मूलभूत ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से छह-मासिक पाली भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शुरू किया गया। व्यक्तिगत विकास और माइंडफुलनेस पर केंद्रित छह-मासिक विपस्सना ध्यान प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शुरू किया गया। इन पाठ्यक्रमों को औपचारिक रूप से उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतीक है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिर्बान गांगुली के द्वारा बीज वक्तव्य दिया, जिसमें उन्होंने पाली भाषा की ऐतिहासिक और आधुनिक प्रासंगिकता पर जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की और बताया कि कैसे पाली साहित्य, विज्ञान और चिकित्सा-अनुसंधान सहित विभिन्न क्षेत्रों के लिए अमूल्य ज्ञान प्रदान करता है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और वैश्विक शिक्षक विश्व गुरु के रूप में इसकी भूमिका के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अटूट प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया भर में बुद्ध की कालातीत शिक्षाओं का प्रसार करने में सहायक रहा है।

स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय में पाली पाठ्यक्रमों का भव्य उद्घाटन

पश्चिम पुकार ब्यूरो

मेरठ। स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ के सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग (तथागत बुद्ध शोधपीठ) के द्वारा प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन पालि-आधारित पाठ्यक्रम उद्घाटन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम की शुरुआत प्रज्ञा और करुणा के प्रतीक भगवान बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुई।

डॉ मुकेश मेहता, सहायक आचार्य, सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग (तथागत बुद्ध शोधपीठ) के द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। साथ ही उन्होंने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन भी शालीनता एवं कुशलता पूर्वक किया।

तीन नए शुरू किए गए पाठ्यक्रम एम.ए. इन पालि (2025-2026)= एक व्यापक स्नातकोत्तर कार्यक्रम, छह मासिक पाली भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम= पाली का मूलभूत ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से, छह मासिक विपस्सना ध्यान प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम= व्यक्तिगत विकास और माइंडफुलनेस पर केंद्रित। इन पाठ्यक्रमों को औपचारिक रूप से उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतीक है। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिर्बान गांगुली के द्वारा बीज वक्तव्य दिया गया, जिसमें उन्होंने पाली भाषा की ऐतिहासिक और आधुनिक प्रासंगिकता पर जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की और बताया कि कैसे पाली साहित्य, विज्ञान और चिकित्सा-अनुसंधान सहित विभिन्न क्षेत्रों के लिए अमूल्य ज्ञान प्रदान करता है। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग ने एक विचारोत्तेजक भाषण दिया जो श्रोताओं के दिलों में गहराई से उतर गया। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और वैश्विक शिक्षक (विश्व गुरु) के रूप में इसकी भूमिका के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अटूट प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया भर में बुद्ध की कालातीत शिक्षाओं का प्रसार करने में सहायक रहा है।

उद्घाटन सुभारती विवि में पाली पाठ्यक्रम का उद्घाटन

भारत ने विश्व को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं: तरुण चुग

ग्रीन इंडिया

मेरठ। सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ के सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग द्वारा प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन पालि-आधारित पाठ्यक्रम उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रज्ञा और करुणा के प्रतीक भगवान बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई।

डॉ. मुकेश मेहता, सहायक आचार्य, सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग (तथागत बुद्ध शोधपीठ) के द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया। साथ ही उन्होंने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन भी शालीनता एवं कुशलता पूर्वक किया।

पाठ्यक्रमों का शुभारंभ:
तीन नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं-

1. एम.ए. इन पालि (2025-2026): एक व्यापक स्नातकोत्तर कार्यक्रम।

2. छह-मासिक पाली भाषा प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमः पाली का मूलभूत ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से।

3. छह-मासिक विपस्सना ध्यान प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमः व्यक्तिगत विकास और माइंडफुलनेस पर केंद्रित।

इन पाठ्यक्रमों को औपचारिक रूप से उपस्थित विशिष्ट अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया, जो प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतीक है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिर्बान गांगुली के द्वारा बीज वक्तव्य दिया गया, जिसमें उन्होंने पाली भाषा की ऐतिहासिक और आधुनिक प्रासंगिकता पर जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की और बताया कि कैसे पाली साहित्य, विज्ञान और चिकित्सा-अनुसंधान सहित विभिन्न क्षेत्रों के लिए अमूल्य ज्ञान प्रदान करता है।भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग ने एक विचारोत्तेजक भाषण दिया, जो श्रोताओं के दिलों में गहराई से उतर गया। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और वैश्विक शिक्षक (विश्व गुरु) के रूप में इसकी भूमिका के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अटूट प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया भर में बुद्ध की कालातीत शिक्षाओं का प्रसार करने में सहायक रहा है। श्री चुग ने "भारत ने विश्व को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं" वाक्यांश का हवाला देते हुए शांति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक के रूप में भारत की ऐतिहासिक भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे बुद्ध की शिक्षाओं ने भारत की पहचान को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में आकार दिया है जो अहिंसा और सद्भाव की वकालत करता है, इसे दूसरों द्वारा अक्सर अपनाए जाने वाले हिंसक रास्तों से अलग करता है।

आयोजन *सुभारती विश्वविद्यालय में पाली पाठ्यक्रमों का हुआ शुभारंभ*

पाली साहित्य विभिन्न क्षेत्रों के लिए करता है अमूल्य ज्ञान प्रदान : गांगुली

मेरठ, 9 जनवरी (देशबन्धु)। स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ के सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग (तथागत बुद्ध शोधपीठ) के द्वारा प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा और बौद्ध शिक्षा को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन पालि-आधारित पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन-कार्यक्रम की शुरुआत प्रज्ञा और करुणा के प्रतीक भगवान बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुई। डॉ. मुकेश मेहता, सहायक आचार्य, सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग (तथागत बुद्ध शोधपीठ) के द्वारा स्वागत वक्तव्य दिया गया।

■ पाली भाषा की ऐतिहासिक और आधुनिक प्रासंगिकता पर जोर दिया

साथ ही उन्होंने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन भी शालीनता एवं कुशलता पूर्वक किया। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिर्बान गांगुली के द्वारा बीज वक्तव्य दिया गया, जिसमें उन्होंने पाली भाषा की ऐतिहासिक और आधुनिक प्रासंगिकता पर जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की और बताया कि कैसे पाली साहित्य, विज्ञान और चिकित्सा-अनुसंधान सहित विभिन्न क्षेत्रों के लिए अमूल्य ज्ञान प्रदान करता है। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुग ने एक विचारोत्तेजक भाषण दिया, जो

श्रोताओं के दिलों में गहराई से उतर गया। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और वैश्विक शिक्षक (विश्व गुरु) के रूप में इसकी भूमिका के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अटूट प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया भर में बुद्ध की कालातीत शिक्षाओं का प्रसार करने में सहायक रहा है। चुग ने भारत ने विश्व को बुद्ध दिया है, युद्ध नहीं वाक्यांश का हवाला देते हुए शांति, ज्ञान और करुणा के प्रतीक के रूप में भारत की ऐतिहासिक भूमिका पर जोर दिया।

उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे बुद्ध की शिक्षाओं ने भारत की पहचान को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में आकार दिया है जो अहिंसा और सद्भाव की वकालत करता है, इसे दूसरों द्वारा अक्सर अपनाए जाने वाले हिंसक रास्तों से अलग करता है। चुग ने पालि भाषा और बौद्ध दर्शन के महत्व को भारत की वैश्विक कूटनीतिक पहलों से भी जोड़ा। उन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से शांति और सह-अस्तित्व के संदेश को फैलाने में भारत सरकार के प्रयासों की सराहना की, इसे भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की आधारशिला बताया।

उन्होंने कहा कि पालि पाठ्यक्रमों का उद्घाटन स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय द्वारा इस दृष्टिकोण के साथ तालमेल बिठाने और विश्व गुरु के रूप में भारत की भूमिका को मजबूत करने का एक सराहनीय कदम है। बुद्ध रिश्र मिशन के महासचिव पूजनीय भिक्षु डॉ. कचायन श्रमण ने शिक्षा और आत्म-विकास में पालि भाषा और विपस्सना ध्यान की महत्वपूर्ण भूमिका पर बात की। साथ ही उन्होंने आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने में इनकी प्रासंगिकता को रेखांकित किया। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. जी.के. थपलियाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने पालि भाषा की प्राचीनता और वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत को समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में दूरदर्शी कदमों के लिए सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग को बधाई दी। सम्राट अशोक सुभारती बौद्ध अध्ययन विभाग के सलाहकार डॉ. हीरो हितो ने सम्मानित अतिथियों, प्रतिभागियों और दर्शकों को उनकी उपस्थिति और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।